

धर्म का आचरण करने वाला सुखी : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 27 अक्टूबर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जाग जाने के बाद प्रमाद नहीं करना चाहिए अच्छे धर्म का आचरण करना चाहिए। जो व्यक्ति धर्म का आचरण करता है वह सुखी बनता है आदमी को धर्म के पथ पर चलना चाहिए। धर्म के आचरण के लिए जिस व्यक्ति में नैतिकता, दया की भावना होनी चाहिए, कल्याण, अनुकंपा की चेतना का विकास होना चाहिए, जिस व्यक्ति में ये गुण होते हैं वह सबके लिए समान पाने योग्य व्यक्ति बन जाता है।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय तेरापंथ भवन में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि धर्म का आचरण करने वाला व्यक्ति अपना वर्तमान जीवन अच्छा बनाता है और मरने के बाद उसे आगे की गति भी अच्छी प्राप्त होती है। मनुष्य को अगली गति के बारे में भी विचार करना चाहिए भविष्य का भी चिंतन करने रहना चाहिए। मानव जीवन अमूल्य है इसका लाभ उठाना चाहिए, इसका लाभ धर्म के आचरण से उठाया जा सकता है। संयम, तपस्या धर्म है। धर्म जीवन में आ गया तो अगली गति अच्छी बन सकती है। इसलिए मनुष्य आत्मा से जागरूक रहे, जीवन की सफलता का महत्वपूर्ण सूत्र है मोह, माया, मूर्च्छा से दूर रहकर अप्रमाद रहना चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सज्मान समर्पण समारोह

सरदारशहर 27 अक्टूबर, 2010

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संस्था राजसमन्द द्वारा संचालित सघन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र टमकोर के पर्यवेक्षक रमेश कुमार जीनगर व अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र फतेहपुर शेखावाटी अहिंसा प्रशिक्षक शतीष शांडिल्य को आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सज्मान समर्पण जैन विश्व भारती लाडनूं, एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन कोलकाता द्वारा आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में दिया गया। राष्ट्रीय संयोजक अध्यक्ष व अध्यक्ष भीखमचन्द नखत, विशिष्ट मार्गदर्शक डॉ. हीरालाल श्रीमाली, चन्द्रशेखर देरासरी, सुरेश कुमार देरासरी, प्रवीण कुमार, सह-संयोजक डॉ. धर्मेन्द्र आचार्य, पुनमचन्द चौरड़िया आदि उपस्थित थे। यह सज्मान अहिंसा प्रशिक्षण के कार्य के लिए प्रदान किया गया।

आचार्य महाश्रमण ने कराया प्रत्याज्ञान

14 दिनों से जारी है मोहनीदेवी का संथारा

तपस्या सहित हुए 37 दिन

सरदारशहर 27 अक्टूबर, 2010।

शहर के बाड़ी बास स्थित सरदारमल बरड़िया के निवास पर पिछले 14 दिनों से मोहनीदेवी बरड़िया का संथारा चल रहा है। श्रीमती बरड़िया को आचार्य महाश्रमण ने 23 दिनों की तपस्या के दौरान 13 अक्टूबर को अपने आचार्य काल के प्रथम संथारे के रूप में प्रत्याज्ञान करवाया था। 90 वर्षीय मोहनीदेवी बरड़िया ने अपने जीवन में 1561 उपवास, 31 बेला, 41 तेला, 11 चोला, 4 पंचोला सहित अनेक प्रकार की तपस्याएं की हैं। उन्होंने मृत्यु को महोत्सव के रूप में स्वीकार करते हुए संथारा, स्वीकार किया है। श्रीमती बरड़िया ने अपने जीवन के 1 लाख 54 हजार 6 सौ 80 घण्टों की मौन साधना की है।

- शीतल बरड़िया